



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

ढाल : 1

सासतों जीव द्रव्य साख्यात, कदें घटें नहीं तिलमात।
तिणरा असंख्यात प्रदेस, घटें वधें नहीं लवलेश।।

जीव द्रव्य प्रत्यक्ष शाश्वत है। उसकी
संख्या तिलमात्र भी कभी नहीं घटती।
उसके असंख्यात प्रदेशों में लेशमात्र
भी घट बढ़ नहीं होती।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

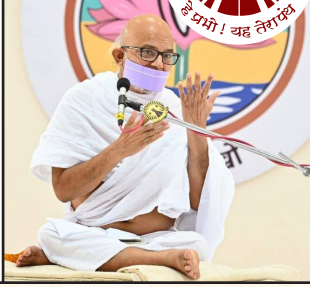
वर्ष 27 • अंक 26 • 30 मार्च - 05 अप्रैल 2026



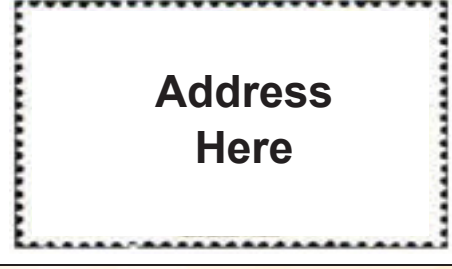
प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 28-03-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये



गुरु के अनुशासन और
उलाहने को स्वीकार कर
विकास करें : आचार्यश्री
महाश्रमण
पेज 02



विनय और अनुशासन
हमारे संघ की गरिमा
है : आचार्यश्री
महाश्रमण
पेज 10



रोम-रोम में रहे प्रामाणिकता की पूंजी : आचार्यश्री महाश्रमण बुद्धों, मनीषियों और तत्त्वज्ञों के पथ पर चलने का रहना चाहिए प्रयास

लाडनू।

23 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के उज्ज्वल नक्षत्र युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज के विषय में 'वह करें जो बुद्धों ने किया' पर उत्तरज्ज्ञायणाणि आगम के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि व्यवहार कैसा होना चाहिए? इस पर आगम कार ने सुंदर दिशा निर्देश दिया है कि व्यवहार धर्माजित होना चाहिए, क्षमा, मार्दव, सरलता व निर्लोमता जैसे गुणों से युक्त होना चाहिए। व्यवहार में सहिष्णुता है तो एक अपेक्षा से वह धर्माजित व्यवहार है। हमारा व्यवहार प्रामाणिक होना चाहिए। हमारे वचन, शारीरिक भाषा, चिंतन,



लेखन आदि में प्रामाणिकता होनी चाहिए। आदमी में प्रामाणिकता का होना जीवन की एक गरिमापूर्ण स्थिति है, जीवन की एक बड़ी पूंजी है। जिस

प्रकार हमारे आराध्य आचार्यश्री भिक्षु का नाम रोम-रोम में बसा होता है, उसी प्रकार हमारे व्यवहार और भावों में सत्य और प्रामाणिकता के प्रति गहरी निष्ठा होनी चाहिए। जिसके हृदय में सच्चाई का वास होता है, वहां साक्षात प्रभु का निवास होता है। यदि कहीं थोड़ा कष्ट भी आए, अपमान भी हो जाए पर मन में यह भाव होना चाहिए कि मैं प्रामाणिकता को नहीं छोड़ूँ। प्रामाणिकता धर्माजित व्यवहार का एक अंग है। साथ ही विनय व्यवहार, बड़ों के प्रति सम्मान का भाव, संघ निष्ठा और व्यवहार में जागरूकता भी होनी चाहिए। जब भी कोई बड़े पथरों तो छोटे को उनका यथोचित सम्मान करना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रोटोकॉल व

लोकोपचार का पालन करते हुए अपनी वाणी और आचरण में मृदुता रखनी चाहिए अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता रखनी चाहिए। अपने दायित्व के प्रति पूर्ण सजग रहें, चाहे वह गोचरी का दायित्व हो अथवा अन्य किसी अपेक्षित व्यवस्था का। अपनी क्षमता के अनुसार जितनी धर्मसंघ की सेवा हो सके, वह करने का प्रयास करना चाहिए। धर्म संघ के सदस्यों को संघ की गरिमा के अनुरूप ही आचरण करना चाहिए। कोई बात हो तो उसका हल परस्पर संवाद से निकाल कर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना चाहिए। जो व्यक्ति बुद्धों, मनीषियों और तत्त्वज्ञों द्वारा बताए गए इस धर्माजित व्यवहार के मार्ग पर चलता है, वह कभी भी निंदा को प्राप्त नहीं होता है।

शिष्य गुरु के प्रति रखे विनय भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

22 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, महातपस्वी, युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उत्तराध्ययन आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु-साधवियों का समुदाय होता है और समुदाय का एक मुखिया भी होता है।

जैन शासन में तीर्थंकर सर्वोच्च व्यक्ति होते हैं, उनसे ऊपर मनुष्यों में कोई

नहीं होता है। वे वीतराग होते हैं और केवलज्ञान, केवलदर्शन संपन्न होते हैं। उनके बाद आचार्य, उपाध्याय आदि कई पदों की व्यवस्था होती है।

हमारे सम्प्रदाय के आद्य अनुशास्ता परमवंदनीय आचार्यश्री भिक्षु हुए। हम उन्हें तीर्थंकर के प्रतिनिधि और हमारे संप्रदाय के आदिकर्ता, जनक कह सकते हैं। उनके बाद की आचार्य परंपरा में अतीत में तेरापंथ धर्मसंघ के दस अध्याय लिखे जा चुके हैं और ग्यारहवां अध्याय प्रवर्धमान है। हमारे धर्मसंघ में अब तक किसी भी साधु को उपाध्याय का पद नहीं

दिया गया है। हमारे धर्मसंघ में प्रमुख पद आचार्य का रहा है।

आचार्य भिक्षु ने फरमाया था कि आगम में उल्लिखित सातों पदों को मैं संभाल रहा हूँ और आज तक वह व्यवस्था चल रही है। अन्य पद आचार्य में ही समाहित हो जाते हैं।

जैन शासन में आचार्य का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य की आज्ञा में साधु-साधवियों, समणी श्रेणी आदि रहते हैं। आचार्य चतुर्विध धर्मसंघ के अनुशास्ता होते हैं। कभी गुरु कुपित या अप्रसन्न हो जाएं तो यह कैसे पता चले



कि गुरु अप्रसन्न है? गुरु के कुपित होने की पहचान के छः लक्षण बताए गए हैं,

जिनसे कुपित होने का अनुमान लगाया जा सकता है। (शेष पेज 9 पर)

गुरु के अनुशासन और उलाहना को स्वीकार कर करें विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

21 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि उत्तरज्ज्ञयणाणि आगम का प्रथम अध्ययन विनय व अनुशासन का शिक्षण देने वाला है। नवदीक्षित साधु-साधवियों और सभी साधु इस प्रथम अध्ययन का यह शिक्षण ग्रहण करने का प्रयास करें। आगम में हमें जो संदेश मिलते हैं उनका स्वाध्याय करते रहें। दशवेआलियम् आगम सीखने के पश्चात् उत्तरज्ज्ञयणाणि आगम भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अनुकूलता के अनुसार सीखने और कंठस्थ करने का प्रयास करें। यह आगम हम चारित्रात्माओं के लिए एक सुंदर मार्गदर्शक है। समय-समय पर आगम का स्वाध्याय और वाचन करते रहना चाहिए। हमें यह भाव रखना चाहिए कि मैं आगम की शरण ले रहा हूँ ताकि मुझे त्राण और उचित



मार्गदर्शन मिले तथा मेरी साधना का क्रम सुचारू रूप से चलता रहे। जैन श्वेतांबर तेरापंथ में ३२ आगम मान्य हैं, ये आगम हमारे लिए एक निधि हैं अतः इन्हें यथानुकूल आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। यह साधु-साधवियों के लिए एक अच्छी खुराक और पोषण बन सकता है।

प्रथम अध्ययन में दो दृष्टियाँ बताई गई हैं। आचार्य अनुशासन करते हैं तो वाणी से कड़ा भी कह सकते हैं और थोड़ी कठोरता भी उनके व्यवहार में दिखाई दे सकती है। आचार्य के इस व्यवहार के प्रति शिष्यों की अलग-अलग दृष्टि हो सकती है। एक शिष्य जो अविनीत प्रकृति का है वह सोचता है

कि गुरुदेव मुझे ठोकरें मार रहे हैं, मुझे चांटा लगा रहे हैं, मुझे गालियाँ दे रहे हैं, मुझ पर प्रहार कर रहे हैं। इस प्रकार का चिंतन करता है जबकि गुरु ने ऐसा कुछ नहीं किया है। इसी चिंतन से वह दुःखी बन जाता है। दूसरा सुविनीत शिष्य सोच रहा है कि सौभाग्य से मुझे ऐसे गुरु मिले हैं जो मुझे पिता और बड़े भाई के तुल्य मेरा हित चाह कर मुझे शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। मैं गुरु की शिक्षाओं पर ध्यान दूँ जिससे मेरा विकास हो जाए, परिष्कार हो जाए। मेरे कारण से गुरुदेव को इतना श्रम करना पड़ा! आगे मैं सावधानी रखने का प्रयास करूँगा। वह शिष्य विनय के दृष्टिकोण से अनुशासन को ग्रहण कर रहा है। यह अनुशासन के प्रति दृष्टिकोण का अन्तर है। यहाँ शिष्य को यह वास्तविक चिंतन करना चाहिए कि ये मेरे गुरु हैं, शिक्षा देना इनका कार्य है तथा ये मेरे विकास और परिष्कार के लिए ही मुझे कुछ कह रहे हैं।

आचार्य अनुशासन व्यवस्था और चित्त समाधि दोनों का संतुलन बनाए रखते हैं। न तो समाधि भंग हो और न

ही अनुशासन की डोर इतनी ढीली हो जाए कि कोई कुछ भी करने लगे। यदि आचार्य उपालम भी दे तो साधु-साधवियों का यह परम धर्म है कि वे उसे सहन करें और यथोचित विनय पूर्ण व्यवहार रखें। शिष्य का यह चिंतन रहे कि ये मेरे गुरु हैं जो फरमाएंगे मेरे हित के लिए फरमाएंगे। शिष्य का भाव रहे कि आपके चरणों में हमारा मस्तक है, आप की शिक्षाओं को हम शिरोधार्य करेंगे। जीवन में इसी विनयपूर्ण दृष्टिकोण के साथ गुरु के अनुशासन और उलाहने को स्वीकार करना ही हमारे लिए कल्याणकारी होता है।

जिज्ञासा समाधान के पश्चात् मुनि जयकुमारजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। आज से श्रावक-श्राविकाओं के लिए प्रारंभ होने वाले प्रेक्षाध्यान शिविर के संभागियों को शिविर की उपसंपदा स्वीकार कराई। बहिर्विहार से समागत साध्वी विशद प्रज्ञाजी, साध्वी मारदव प्रभाजी आदि ने गुरु चरणों में सामूहिक गीत व वक्तव्य द्वारा प्रस्तुति दी।

समय प्रबंधन से की जा सकती है जीवन में सफलता प्राप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने प्रदान किया HPS का सूत्र : H : HAPPINESS— P: PRIORITY—S: SACRIFICE

लाडनू।

20 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'सुधर्मा सभा' में आगम आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'विवेक ही धर्म है' - हमारा विवेक अनेक संदर्भों में जागृत रहना चाहिए। खाने और न खाने में, बोलने और न बोलने में विवेक अच्छा है। कहीं उपवास करना अच्छा हो सकता है तो कहीं न करना भी अच्छा हो सकता है, इन सबमें साधक का विवेक जागृत रहना चाहिए।

शास्त्रकार ने कहा है कि बाहर जाने में भी विवेक रखो। जैसे गोचरी जाना हो तो यह विवेक रखना चाहिए कि गोचरी के लिए कौनसा समय उपयुक्त है? साधु के लिए कहा गया कि समय पर बाहर निकलो और समय पर लौट आओ। जो



कार्य जिस समय करने का हो, उसे उसी समय संपन्न करने का प्रयास करना चाहिए। दिनचर्या में उठने और सोने का समय मोटा-मोटी निर्धारित होना चाहिए। संगठन का मुखिया जो आचरण करता है, अन्य पर उसका प्रभाव पड़ सकता

है। यदि मुखिया आचार, नियम, मर्यादा का अच्छी प्रकार ध्यान रखता है तो पीछे वालों को भी प्रेरणा मिल सकती है और पीछे वालों को भी वह कुछ कहने का अधिकारी हो सकता है। यदि स्वयं ध्यान नहीं देता है तो पीछे वालों को भी कुछ

कहना हो सकता है। जैसे कमीज का ऊपर वाला बटन सही लग जाए तो नीचे के सारे बटन अपने आप सही लग जाते हैं। अतः जो काम जिस समय सम्पन्न करने का है यथोचित्य उसे उसी समय संपादित करने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में समय प्रबंधन अच्छा रहे तो हमारी जीवन चर्या अच्छी चल सकती है। समय प्रबंधन की कला को पूज्य प्रवर ने जैन सिद्धान्त 'केवली समुद्घात' के उदाहरण द्वारा समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार केवली सीमित समय में विपुल कर्मों का क्षय करने के लिए समुद्घात करते हैं उसी प्रकार व्यक्ति को भी अपने सीमित समय में अधिकतम कार्यों को व्यवस्थित करना चाहिए। जब कार्य अधिक हो और समय कम हो तो हमें H.P.S. का सूत्र अपनाना चाहिए। H अर्थात् Happiness अर्थात् कार्य अधिक हो तो भी तनाव न पड़े और भीतर पूर्ण

प्रसन्नता बनाए रखें। P से Priority अर्थात् कार्यों की प्राथमिकता तय करें। जो कार्य सबसे आवश्यक हों उन्हें पहले संपन्न करें तथा S से Sacrifice अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर अपनी सुविधाओं जैसे नींद या अन्य कोई काम का बलिदान कर समय निकालें।

इस प्रकार जो कार्य जिस समय संपन्न करने का हो, उसे उसी समय संपन्न करने वाला व्यक्ति ही जीवन और साधना के पथ पर सच्ची सफलता प्राप्त करता है।

प्रवचन उपरांत जिज्ञासा समाधान व उसके पश्चात् आज साधुओं के 10 दिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर के समापन के संदर्भ में मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि धर्मेंशकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी शुभ्रयशाजी ने भी साधवियों के प्रेक्षा ध्यान शिविर के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का शुभारंभ

उत्तर कोलकाता।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में बाबूलाल बाफना ने उद्घाटन किया। जैन संस्कारक प्रवीण सिंधी, विनोद आंचलिया, प्रशिक्षु संस्कारक राहुल बाफना ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार किया।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनन्त बागरेचा, सुरेश चंद्र गोयल (प्रधान न्यासी-महासभा), रतन दुगड़ (पूर्व अध्यक्ष -अभातेयुप), पीयूष लूनिया (राष्ट्रीय प्रभारी एटीडीसी), सुमित छाजेड़ (शाखा प्रभारी), तेयुप उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप हीरावत

सहित अभातेयुप साथी, युवा शक्ति एवं गणमान्यों की रही उपस्थिति।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का सेवा का एक महान् कार्यक्रम है प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में मरिज यहां से लाभान्वित होते हैं, तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता ने जो परिश्रम किया है वह अति विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है।

यह परिषद ऊर्जावान, कर्मठता से संप्रेषित परिषद है आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर से संपूर्ण उत्तर कोलकाता लाभान्वित होगी एवं संघ और संघपति का नाम और गुंजायमान होगा।



'आरण्य' का भव्य आयोजन

युवाओं ने प्रकृति संग किया आत्मविकास मंथन



बेंगलूरु/मडिकेरी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद गांधीनगर बेंगलूरु द्वारा त्रिदिवसीय 'आरण्य - द एसेंस ऑफ नेचर' का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न शहरों से आए युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए प्रकृति के बीच में सीखने, जुड़ने और आत्मविकास का अनूठा अनुभव प्राप्त किया। परिषद अध्यक्ष प्रसन्न धोका ने आए हुए सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने किया तथा सभी साथियों के प्रति मंगल कामना व्यक्त की। अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी, शाखा प्रभारी श्री अमित दक ने अपने उद्बोधन से 'आरण्य' के उद्देश्य और संगठन निर्माण में इसकी भूमिका

को स्पष्ट किया। तीन दिनों के दौरान ट्रेकिंग, एस्टेट वॉक, व्यक्तित्व विकास कार्यशाला, टीटीएफ प्रशिक्षण, शनिवार सामायिक एवं सामूहिक गतिविधियाँ जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रतिभागियों ने अनुशासन, टीमवर्क और नेतृत्व क्षमता का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। सीपीएस अकादमी प्रभारी दिनेश मरोठी एवं सह प्रभारी सोनू डागा ने विभिन्न सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को सक्रिय रूप से जोड़ा और व्यक्तित्व विकास के गुर सिखाए।

टीटीएफ के ग्रीन ब्रिगेड सदस्य प्रांजल दुगड़ ने आपदा प्रबंधन के व्यावहारिक प्रशिक्षण का लाभ दिया। शनिवार की सायं 7 से 8 बजे के बीच सभी साथियों के सामायिक कर आध्यात्मिकता का अनुभव किया।

समापन समारोह मडिकेरी की घाटियों में आयोजित हुआ। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को ट्रेक संपन्नता प्रमाण पत्र

प्रदान कर सम्मानित किया गया। फिट युवा हिट युवा के दक्षिण प्रभारी तरुण पटावरी ने आयोजन की सफलता पर सभी प्रतिभागियों को शुभकामना संप्रेषित की। चौका सत्कार सह प्रभारी गौतम खाब्या ने सभी को लेवल-1 ट्रेक सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर बधाई दी। परिषद मंत्री प्रदीप चोपड़ा ने इस कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

कार्यक्रम में हैदराबाद, आरआर नगर, एचबीएसटी हनुमंतनगर, तिरुपुर एवं टीकेएम चेन्नई से आए प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए आयोजन की सराहना की। संयोजक शमनीष भंसाली एवं सह-संयोजक प्रतीक जोगड़ के कुशल नेतृत्व में यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। यह आयोजन न केवल युवाओं को प्रकृति से जोड़ने का माध्यम बना, बल्कि संगठनात्मक विकास और आत्मनिर्माण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

पांच दिवसीय समर कैंप 2026 का सफल आयोजन

उल्हासनगर।

टिटिलागढ़। ज्ञानशाला ने पांच दिवसीय समर कैंप का सफलतापूर्वक आयोजित किया।

समर कैंप में बच्चों को योग, प्राणायाम के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के अंतर्गत जीवन विज्ञान की शिक्षा देते हुए कहानी और प्रयोग के माध्यम से बच्चों को संस्कार का प्रशिक्षण दिया। नशा आदि व्यसनों से बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा दी। कैसे उठना कैसे बैठना क्या खाना क्या नहीं खाना क्या बोलना क्या नहीं बोलना इसकी शिक्षा देने का प्रयास किया।

अहिंसा और सत्य जैसे विषयों को बच्चों को समझाया गया। इसके साथ-साथ ब्रेन पावर बूस्टिंग डेमो क्लास, संगीत और नृत्य क्लास, विदाउट फायर कुकिंग क्लास, ड्राइंग और क्राफ्ट की क्लास के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति जागरूक करने हेतु प्लांटेशन की क्लास करवाई। इसके साथ-साथ बच्चों के बीच सेल्फी फोटो फ्रेम तथा प्लांट से संबंधित दो क्राफ्ट कंपटीशन करवाए। बच्चों को एंजॉय करने

के लिए फनी गेम खिलाया गया तथा कंपटीशन में और गेम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। मम्मी लोगों के बीच भी दो लेख कंपटीशन रखा गया था सर्वश्रेष्ठ विचार को पुरस्कृत किया गया।

समर कैंप के अंतिम दिन आधुनिक युग के साथ कदमताल करने के लिए बच्चों के बीच में डांस कंपटीशन रखा गया था। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई उसके पश्चात जहां बेटियों ने दुर्गा के गेटअप में नृत्य प्रस्तुत किया तो वहीं बेटों ने राम कृष्ण के गेटअप में नृत्य प्रस्तुत कर माहौल को पूरा अध्यात्म मय, धर्म मय बना दिया। बच्चों को पुरस्कृत किया गया। प्रशिक्षिका बहनों को समर कैंप में पूरा सहयोग करने के लिए उनके परिश्रम को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रशिक्षिका सुभद्रा जैन ने किया। समर कैंप से लगभग 50 बच्चे लाभान्वित हुए। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने समर कैंप को सफल बनाने के लिए सबका बहुत-बहुत आभार प्रकट किया।

सामाजिक सेवा

लिलुआ।

तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ एवं तेरापंथ किशोर मंडल, लिलुआ द्वारा Holy Family Convent School, Liluah में बच्चों में वस्त्र और पौष्टिक आहार वितरण किया

गया। सभी साथियों ने उत्साह पूर्वक बच्चों को वस्त्र और पौष्टिक आहार वितरण में सहयोग किया। परिषद की ओर से मंत्री अंकुश छाजेड़ ने दान दातार के प्रति आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम के संयोजक को साधुवाद ज्ञापित किया।

देशभर में शाखा मंडलों के माध्यम से 'गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान' का भव्य आयोजन

लाडनू।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के पावन अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा देशभर में अपनी शाखा मंडलों के माध्यम से 'गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान' का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत गृहलक्ष्मी के कार्यों का समुचित आकलन करने तथा उनके सम्मान और गरिमा के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से शाखा मंडलों द्वारा विभिन्न एनजीओ को आमंत्रित किया गया। इस संवाद से अत्यंत प्रेरणादायी निष्कर्ष प्राप्त हुए और गृहलक्ष्मी को पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर उचित पहचान एवं सम्मान दिलाने के लिए सकारात्मक चिंतन-मंथन हुआ। देशभर की कुल 194 शाखा मंडलों द्वारा 1504 एनजीओ को आमंत्रित किया गया। माता द्वारा अपने कलेजे के टुकड़े को अध्यात्म की राह पर



अग्रसर होने के लिए धर्मसंघ को समर्पित कर देना अत्यंत विरल और प्रेरणादायी समर्पण का उदाहरण है। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित चारित्रात्माओं की माता/दादी/नानी को 'प्रेरणा सम्मान' प्रदान किया गया। देशभर में कुल 329 माताओं को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की रिपोर्ट देशभर के 264 समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।

लाडनू में आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में 13 मार्च को आयोजित प्रेरणा सम्मान समारोह में कुल 37 माताओं को सम्मानित किया गया। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जैसे साधु-साध्वी तीर्थ हैं, वैसे ही श्रावक-श्राविका भी तीर्थ स्वरूप हैं। साधु-संत जहाँ बड़े रत्नों की माला के समान हैं, वहीं श्रावक-श्राविका छोटे रत्नों की माला के समान हैं। उन्होंने

कहा कि भगवान ऋषभदेव को जन्म देने वाली माता विलक्षण थीं, उसी प्रकार चारित्रात्माओं को जन्म देने वाली माताएं भी अपना विशिष्ट अस्तित्व रखती हैं। अपने बच्चों को धर्मपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देना, उन्हें दीक्षा के लिए तैयार करना तथा यदि कोई स्वयं संयम मार्ग की ओर बढ़ना चाहे तो उसका सहयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा नानी-दादी के सम्मान के इस उपक्रम को अत्यंत सराहनीय बताया। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने माताओं द्वारा संयम मार्ग के लिए किए गए त्याग और योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें सम्मानित करने की एक सुदृढ़ परंपरा प्रारंभ की है। उन्होंने कहा कि महिला मंडल गुरुदेव के निर्देशानुसार अंकुरम, हमसफर, सखी समिट आदि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से समाज

में जागरूकता और प्रशिक्षण का कार्य कर रहा है। ये सभी कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से भी संचालित किए जाते हैं और शिक्षक प्रशिक्षण जैसे कार्य भी अत्यंत सराहनीय हैं। महिला मंडल आचार्य प्रवर के सपनों को साकार करने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

कार्यक्रम का शुभारंभ लाडनू महिला मंडल की उपाध्यक्ष शोभा दूगड़ के स्वागत वक्तव्य से हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन संगठन मंत्री निधि सेखानी ने किया तथा सम्मान पत्र का वाचन उपाध्यक्ष नीतू पटावरी ने किया। कार्यक्रम में सुजानगढ़, सरदारशहर, बीदासर, छपर, छोटी खाटू एवं लाडनू महिला मंडल के सदस्यों की पूर्ण सहभागिता रही। लाडनू महिला मंडल की मंत्री लीना दुगड़ भी पूरी टीम के साथ उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबर

'फिट वुमेन वीक' में 47 महिलाओं ने कराई स्वास्थ्य जाँच

बेंगलुरु। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर (ATDC) द्वारा आयोजित 'फिट वुमेन वीक' का सफल समापन हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की इस पहल के तहत बेंगलुरु के विभिन्न केंद्रों पर किया गया तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु द्वारा प्रबंधित इस शिविर में महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए 7 महत्वपूर्ण जाँचें शामिल थीं।

टीपीएफ द्वारा नेटवर्किंग मीट का आयोजन

कोलकाता पूर्वांचल। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, कोलकाता पूर्वांचल ने स्थानीय पार्क प्राइम होटल में नेटवर्किंग मीट का आयोजन किया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से प्रोफेशनल्स ने अपने अनुभव साझा किए तथा अपने एक्सपर्टिज के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के साथ किया गया। कोलकाता पूर्वांचल ब्रांच के अध्यक्ष राकेश सिंघी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा नेटवर्किंग के महत्व को बताया। ईस्ट जोन १ के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया ने टीपीएफ की गतिविधियों की जानकारी दी।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहाँ सरलता है, वहाँ आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।
— आचार्य श्री महाश्रमण

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।
— आचार्य श्री महाश्रमण

सप्त दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का दीक्षांत समारोह

पीलीबंगा।

Confidential Public Speaking के सप्त दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का दीक्षांत समारोह अत्यंत गरिमामय एवं प्रेरणादायक वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री पवन नौलखा की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित हुआ। साथ ही अभातेयूप के प्रवृत्ति सलाहकार देवेन्द्र डागा, शाखा प्रभारी अनुज जैन, क्षेत्रीय सहयोगी दीपक पुगलिया सहित अनेक गणमान्य अतिथियों की

ऊर्जावान उपस्थिति ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। पीलीबंगा परिषद के अध्यक्ष हेमंत बांठिया ने जानकारी दी कि इस 7 दिवसीय कार्यशाला में 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की, जिनमें से 24 प्रतिभागियों को CPS ग्रेजुएट प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों द्वारा दिए गए प्रभावी भाषणों पर मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन भी किया गया। CPS की JOURNERY शुरू करवाने वाली zonal trainer निधि सालेचा, चेतना सिंघवी के बाद अहमदाबाद से पधारी नेशनल ट्रेनर अनिला सेठिया ने

अपने उद्बोधन में सभी को CPS की इस व्यक्तित्व विकास यात्रा को निरंतर जारी रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के आंचलिक प्रभारी देवेन्द्र जी बांठिया एवं विशिष्ट अतिथि हनुमानगढ़ जिला की भाजपा उपाध्यक्ष पुष्पा नाहटा ने परिषद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को सराहा और सभी प्रतिभागियों के शुभ भविष्य की मंगलकामना की। अंत में परिषद के मंत्री रूपेश सुराणा ने इस सफल आयोजन में जुड़े सभी सहयोगियों, मैनेजमेंट टीम एवं श्रावक समाज के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

प्रेक्षा ध्यान का आध्यात्मिक आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में 'ऋषम सम्यक सामायिक' प्रेक्षा ध्यान का आध्यात्मिक आयोजन लक्ष्मी सेखानी, वेलकिन पार्क, बेगमपेट, सिकंदराबाद में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के जप एवं मंगल भावना के संगान से हुआ। तत्पश्चात त्रिपदी वंदना एवं प्रेक्षा गीत का मधुर संगान किया गया, जिससे वातावरण

पूर्णतः आध्यात्मिक एवं भक्तिमय बन गया। सामायिक के अंतर्गत प्रतिक्रमण की चार पट्टियों का सामूहिक उच्चारण किया गया। साथ ही 'प्रहर' का सरल एवं सारगर्भित अर्थ समझाते हुए 24 तीर्थंकरों के मोक्ष प्रहर की जानकारी भी सहज भाषा में प्रस्तुत की गई, जिससे सभी बहनों को गहन आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ। प्रेक्षा प्रशिक्षिका रीता सुराणा ने 14 नियमों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए प्रत्येक नियम का अर्थ स्पष्ट किया। उपस्थित

बहनों ने प्रतिदिन 14 नियमों का पालन करने का संकल्प लिया। साथ ही उन्होंने अहंम ध्यान का प्रयोग भी करवाया, जिससे सभी को आत्मिक शांति एवं एकाग्रता का अनुभव हुआ। योगक्षेम वर्ष पर गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी का व्याख्यान सभी अवश्य सुनने की प्रेरणा दी। इस सामायिक में लगभग 21 बहनों की गरिमाययी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन अंजु चौरडिया द्वारा आभार ज्ञापन के साथ हुआ।

टीटीएफ कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा एनडीआरएफ और एसडीआरएफ टीम के सहयोग से तुलसी निकेतन स्कूल सेक्टर 4 में टीटीएफ (तेरापंथ टास्क फोर्स) कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। उसके पश्चात तुलसी निकेतन अध्यक्ष अरुण कोठारी ने सभी को इस कार्यशाला से सीखने के

लिए प्रेरित किया। स्वागत तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया द्वारा किया गया।

एनडीआरएफ हेड अरुण शर्मा और उनकी टीम ने विभिन्न उदाहरणों के द्वारा बताया कि किस तरह से आपदा प्रबंधन के समय कार्य किया जाता है। घर पर आग लगने पर, सांप काटने पर, सीपीआर, ब्लीडिंग होने या कट लगने पर, बाढ़ आने पर आदि विभिन्न आपदा की स्थिति में डेमो देकर विस्तार से जानकारी दी गई।

आभार मंत्री विनीत फुलफगर द्वारा किया गया।

SochX-The Youth Transforming Workshop का सफल आयोजन

अहमदाबाद।

तेरापंथ किशोर मंडल अहमदाबाद द्वारा आयोजित SochX - The Youth Transforming Workshop तेरापंथ भवन, शाहिबाग, अहमदाबाद में अत्यंत प्रेरणादायक एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस कार्यशाला का विषय 'Personality, Mindset and Internal Growth - Life Beyond Limits' रहा, जिसमें युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास, सकारात्मक सोच एवं आंतरिक शक्ति को पहचानने और जीवन में सीमाओं से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई।

इस अवसर पर सत्र के ट्रेनर राहुल बोराणा ने अत्यंत प्रभावशाली एवं सरल शैली में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने जीवन में सही मानसिकता, आत्मविश्वास एवं निरंतर आत्मविकास के महत्व को उदाहरणों के माध्यम से समझाया।

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद

अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रदीप बागरेचा की गरिमामयी उपस्थिति रही।

उन्होंने भी इस सत्र की अत्यंत सराहना करते हुए कहा कि ऐसे प्रेरणादायक सत्र किशोर मंडल द्वारा प्रत्येक सप्ताह आयोजित किए जाने चाहिए ताकि युवाओं का निरंतर विकास हो सके। साथ ही उन्होंने यह भी प्रेरणा दी कि सभी CPS में सक्रिय रूप से भाग ले, जिससे उनका व्यक्तित्व एवं नेतृत्व क्षमता और अधिक सशक्त बन सके। साथ ही CPS के नेशनल ट्रेनर विवेक संकलेचा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

उन्होंने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए सत्र को अत्यंत उत्कृष्ट बताया और कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवाओं में सकारात्मक सोच एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजक मनन बागरेचा द्वारा प्रभावशाली ढंग से किया गया, जिससे संपूर्ण आयोजन सुव्यवस्थित एवं आकर्षक बना रहा। अंत में भुवल छाजेड़ द्वारा सभी के प्रति आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आयोजित इस सत्र के 29th वें रक्तदान शिविर का Atdc पूर्वांचल कोलकाता के परिसर में किया। जिसमें कुल 27 यूनिट रक्त का दान प्राप्त हुआ। शिविर की आयोजना में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ एटीडीसी पूर्वांचल कोलकाता के सलाहकार रवि दूगड़ एवं स्टाफ्स का।

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संचालित और तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा समर्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर पर ओसवाल सभा के संयुक्त तत्वावधान में विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में शिविर आयोजित किया गया।



संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन गृह प्रवेश

- **उदयपुर।** अनिल खिमेसरा के नवीन फ्लैट का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कारक सुबोध दुगड़ एवं प्रशिक्षु संस्कारक भूपेश खिमेसरा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई।
- **उदयपुर।** स्व. हेमराज- कमलाबाई बरडिया के पुत्र हर्ष - रुचि बरडिया (चूरू - कोलकता- सिडनी निवासी) के नवीन मकान का सिडनी में गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से ऑनलाइन माध्यम से करवाया गया। संस्कारक सुबोध दुगड़ एवं प्रशिक्षु संस्कारक भूपेश खिमेसरा द्वारा करवाया गया।

पाणिग्रहण संस्कार

- **उदयपुर।** अभय जारोली उदयपुर निवासी के सुपुत्र अमन जारोली का शुभ विवाह संजय मुनोत बेलवंडी (महाराष्ट्र) निवासी की सुपुत्री तेजश्री मुनोत के संग ही संस्कारक सुबोध दुगड़, संस्कारक पंकज भंडारी एवं प्रशिक्षु संस्कारक भूपेश खिमेसरा द्वारा पूर्ण विधि से सम्पन्न करवाया।
- **नागपुर।** दिनेश बैद के सुपुत्र राहुल बैद का शुभ विवाह नरखेड (नागपुर) निवासी तिलोकचंद बाफना की सुपुत्री गरिमा बाफना के साथ अभिजीत मुहूर्त उपरान्त होटल एटेरीना, त्रिमूर्ति नगर, नागपुर में जैन संस्कार विधि से सानन्द सम्पन्न हुआ। जैन संस्कारक आनंदमल सेठिया, महेंद्र आंचलिया, CA उपासक आदित्य कोठारी ने विवाह संस्कार सम्पन्न करवाया।
- **दिल्ली।** सरदारशहर निवासी, कोलकाता प्रवासी प्रतीक जैन (गोलछा) (सुपुत्र अणुव्रत अनुयायि स्व. पन्नालाल-स्व. भंवी देवी गोलछा) (सुपुत्र प्रकाश-प्रीति गोलछा) का विवाह संस्कार सरदारशहर निवासी, दिल्ली प्रवासी मुस्कान नाहटा सुपुत्री स्व. करनीदान-अमराव देवी नाहटा सुपुत्री मनोज-मनीषा नाहटा के साथ संस्कारक सुशील डागा, पवन गिड़िया, मनीष बरमेचा, संजय संचेती द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

नामकरण संस्कार

- **पूर्वांचल कोलकाता।** हर्षुल डागा (सुपुत्र विनोद डागा- नेहा डागा) एवं अक्षिता डागा पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से वेदम लॉन्स बैंक्वेट, साल्टलेक, कोलकाता पर हुआ। जैन संस्कारक विजय बरमेचा एवं पंकज आंचलिया ने बड़े ही सुंदर और पूर्ण मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संचालित किया।

स्मृति सभा

- **उदयपुर।** मांगीदेवी मेहता का स्वर्गवास हो जाने पर स्मृति सभा साध्वीश्री डॉ पियुषप्रभा जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन महाप्रज्ञ विहार, उदयपुर में आयोजित हुई। संस्कारक सुबोध दुगड़ ने जैन संस्कार विधि करवाई।

नूतन प्रतिष्ठान

- **साउथ हावड़ा।** टमकोर निवासी एवं साउथ हावड़ा प्रवासी विनोद कुमार-मंजू देवी गिड़िया के सुपुत्र विशाल गिड़िया के नूतन प्रतिष्ठान का पूजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन कुमार बैगाणी एवं हितेंद्र बैद ने सम्पूर्ण विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम को सानन्द संपन्न करवाया।

जहां समर्पण है- वहां विकास है

उत्तर कोलकाता।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में विनायक एन्क्लेव में 'कैसे करे योगक्षेम' कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें 35 बहिनें थी। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा मैं कुछ होना चाहती हूँ। अनंत अनंत प्राणियों में एक मनुष्य भी है वह विकास चाहता है, कुछ बनना चाहता है। विकास के लिए व्यक्ति को अहंकार विलय की साधना करनी चाहिए। जहां समर्पण है वहां विकास

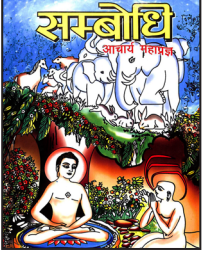
है। जहां अहंकार वहां विनाश है। अर्हत भगवान पूर्ण होते हैं।

हम अपूर्ण हैं हमें पूर्णता की विकास करना। विकास के लिए निस्पृहता चाहिए। भौतिक चाह नहीं आध्यात्मिक होनी चाहिए। केवल कर्म क्षय की भावना होनी चाहिए। पद आकांक्षा विकास के बाधक तत्व हैं। व्यक्ति को सरल होना चाहिए। जो सीधा होता है वही सिद्ध होता है। भला, भोला चालाक तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं। जो भला होता है उसका विकास होता है। हर पास्थिति में व्यक्ति को संतुलित रहना चाहिए। मन को शांत रखना दूसरों के हितों का भी ध्यान रखना

चाहिए। जो प्राप्त है उसकी सुरक्षा करनी चाहिए, जो अप्राप्त है उसको प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। अनुप्रेक्षा जप, ध्यान स्वाध्याय, आत्म निरीक्षण के माध्यम से व्यक्ति विकास के शिखर तक पहुंच सकता है।

मुनि परमानंदजी ने कहा व्यक्ति उन्नति चाहता है, उन्नति के लिए मन को शांत रखना चाहिए। उपासिका सुनीता डोसी, प्रेक्षा प्रशिक्षक श्वेता भंसाली ने विचार रखे। स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सपना बरमेचा ने किया। आभार मंत्री सुनीता बैद ने किया। मर्यादा आधारित प्रश्न मंच का कार्यक्रम हुआ।

संबोधि

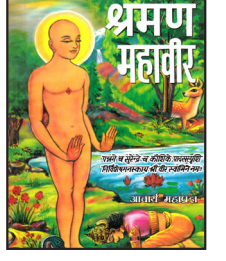


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

श्रमण महावीर

सतत
जागरण

ध्यान के पथ पर वही आरूढ़ हो सकता है जिसने सम्यक् जान लिया कि यहां कोई सार नहीं है। जो सार है उसे खोजो। सार-सत्य को जानने की जिसमें अभीप्सा जागृत होती है, वही ध्याता हो सकता है। आचार्यश्री तुलसी ने मनोनुशासनम् में कहा है- 'स्वरूपमधिजिगमिषुर्ध्याता'- जो अपने स्वरूप को (मैं कौन हूँ) जानना चाहता है, वह ध्याता होता है। संसार की असारता का, पीड़ा का बोध विरक्ति लाता है, और विरक्त व्यक्ति शक्ति की खोज में निकलता है। जहां विरक्ति न हो और कोई विशेष घटना की अभिप्रेरणा न हो, वहां सामान्यतया इस महान् दुराध्य पथ पर अग्रसर होना कठिन है। कुछ लोग किसी विशेष उपलब्धि के लिए कौतूहल वश निकल पड़ते हैं किन्तु वे मंजिल तक नहीं पहुंच सकते। मंजिल पर वे ही पहुंच पाते हैं, जो साध्य के सिवाय और कुछ भी नहीं देखते, मध्य में नहीं रुकते।

स्वामी रामकृष्ण ने विवेकानंद से कहा-नरेन्द्र ! मेरे पास अणिमा आदि आठ सिद्धियां हैं। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए उनकी कोई जरूरत नहीं। आज तक उनका कोई उपयोग नहीं किया। मैं चाहता हूँ वे तुझे दे दूँ। तेरे काम आयेगी। विवेकानंद ने पूछा-क्या ईश्वर प्राप्ति में वे सहयोगी हैं? कहा-नहीं। विवेकानंद ने कहा-तब मुझे नहीं चाहिए। पहले ईश्वर-प्राप्ति, उसके बाद जरूरत होगी तो वे स्वयं ले लेंगे।' सिद्धियों का प्रलोभन कोई कम लोभ नहीं है। सिद्धियों या चमत्कारों की बात इस तथ्य की सूचना है कि साधक में स्वरूप की जिज्ञासा नहीं है, स्थूल वैभव के आकर्षण को छोड़ वह सूक्ष्म में आसक्त है। आसक्ति बंधन है, संसार है। ध्याता का पहला गुण है-मुमुक्षा, मुक्त होने का तीव्र भाव। मुमुक्षा के अभाव में ध्यान का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। दुःख-मुक्ति, पूर्ण स्वातन्त्र्य ध्यान का कार्य है। बुद्ध ने अपने भिक्षुओं से कहा-भिक्षुओ ! दूसरे प्रश्नों में मत उलझो, दुःख से मुक्त होना क्या कम है? उस तीर लगे व्यक्ति की तरह व्यर्थ मूर्खता नहीं करना। किसी व्यक्ति के शरीर में तीर लग गया। कराह रहा है। कोई आदमी निकालने के लिए आया, तब कहा-उहरो, पहले, मेरे इन प्रश्नों का उत्तर दो। यह तीर किस दिशा से आया है? किसने बनाया है? किसका है? विषयुक्त है या निर्विष ? वह समझदार था। उसने कहा-भले आदमी ! ये प्रश्न पीछे भी पूछे जा सकते हैं। पहले इस निकलवा लो।

(क्रमशः)

भगवान आश्वसन की भाषा में बोले- गौतम! तुम अधीर क्यों हो रहे हो? तुम चिरकाल से मेरे साथ स्नेह-सूत्र से बंधे हुए हो। चिरकाल से मेरे प्रशंसक हो। चिरकाल से परिचित हो। चिरकाल से प्रेम करते रहे हो। चिरकाल से अनुगमन करते रहे हो। चिरकाल से अनुकूल बरतते रहे हो।

इससे पहले जन्म में मैं देव था, उस समय तुम मेरे साथ थे। मनुष्य जन्म में भी तुम मेरे साथ हो। मेरा और तुम्हारा संबंध चिरपुराण है। भविष्य में इस देह-मुक्ति के बाद हम दोनों तुल्य होंगे। मेरा और तुम्हारा अर्थ भिन्न नहीं होगा, प्रयोजन भिन्न नहीं होगा, क्षेत्र भिन्न नहीं होगा। हम दोनों में पूर्ण साम्य होगा, कोई भी नानात्व नहीं होगा। यह सब स्वल्प काल में ही घटित होने वाला है। फिर तुम खिन्न क्यों होते हो? तुम जागरूक रहो, पल भर भी प्रमाद मत करो।

भगवान के आश्वसन से गौतम में नव-चेतना का संचार हो गया। वे चिन्ता से मुक्त हो पुनः अप्रमाद के क्षण में आ गए। फिर भी उनके अतल में उभरती जिज्ञासा समाहित नहीं हुई। चेतना के विकास का पथ छोटा और लम्बा क्यों होता है-इस प्रश्न में उनका मन अब भी उलझ रहा था। उन्होंने अपनी उलझन भगवान के सामने रखी। भगवान ने उसका समाधान दिया। वह समाधान महान आत्मा द्वारा दिया हुआ आत्मा के उदय का महान संदेश है। उसका छोटा-सा चित्र इन रेखाओं में आलेखित होता है-

अचेतन जगत को नियम की श्रृंखला में बांधा जा सकता है, एक सांचे में ढाला जा सकता है। चेतन जगत नियमन करने वाला है। उसमें चेतना की स्वतंत्रता है। उसके चैतन्य-विकास के अनन्त स्तर हैं। उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की असंख्य धाराएं हैं। फिर अचेतन की भांति उसे कैसे किया जा सकता है नियमबद्ध और कैसे दिया जा सकता है उसे ढलने के लिए एक सांचा? जहां आंतरिक परिवर्तन की स्वतंत्रता है, पूर्ण स्वतंत्रता है, दिशा और गति की स्वतंत्रता है, किसी का हस्तक्षेप नहीं है, वहां मार्ग छोटा और लम्बा होगा ही। यदि ऐसा न हो तो सस्वतंत्रता का अर्थ ही क्या? सबके लिए एक ही गति से चलना अनिवार्य हो तो फिर स्वतंत्रता और परतंत्रता के बीच भेद-रेखा कहां खींची जाए?

भगवान ने रहस्य को अनावृत करते हुए कहा- 'गौतम! इन नव-दीक्षित श्रमणों का साधना-पथ छोटा नहीं है। ये द्रुतगति से चले। इन्होंने स्नेह-सूत्र को तत्परता से छिन्न कर डाला। इसलिए ये अपने लक्ष्य पर जल्दी पहुंच गए।

'तुम अभी स्नेह-सूत्र को छिन्न नहीं कर पाए हो। तुम्हारी आसक्ति का धागा मेरे शरीर में उलझ रहा है। तुम जानते हो कि स्नेह का बंधन कितना सूक्ष्म और कितना जटिल होता है। काठ को भेद देने वाला मधुकर कमल-कोष में बन्दी बन जाता है। तुम इस बंधन को देखो और देखते रहो। एक क्षण आएगा कि तुम देखोगे अपने में प्रकाश ही प्रकाश। सब कुछ आलोकित हो उठेगा। कितना अद्भुत होगा वह क्षण!'

भगवान की निर्मल वाणी का चिंतन पा गौतम का मन प्रफुल्ल हो उठा। उनके तपःपूत मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। आखों में ज्योति भर गई। वे सर्वात्मना स्वस्थ हो गए। उन्हें स्वप्न के बाद फिर जागृति का अनुभव होने लगा। उन्होंने सोचा- भगवान ने जो कहा- 'गौतम! पलभर भी प्रमाद मत करो'- इसका रहस्य क्या है? इसका दर्शन क्या है? क्या पलभर का प्रमाद इतना भयानक होता है, जिसके लिए भगवान को मुझे चेतावनी देनी पड़े? क्या पल-भर का प्रमाद सारे अप्रमाद को लील जाता है? मुझे इस जिज्ञासा का समाधान पाना ही होगा।

गौतम ने अपनी जिज्ञासा भगवान के सामने रख दी। भगवान ने पूछा- 'तुमने दीप को देखा है?'

'भन्ते! देखा है।'

'दीप जलता है, तब क्या होता है?'

'भन्ते! अंधकार के परमाणु तैजस में बदल जाते हैं। कमरा प्रकाशमय बन जाता है।'

'वह कब तक प्रकाशमय रहता है?'

'भन्ते ! तब तक दीप जलता रहे।'

'एक पल के लिए भी दीप बुझ जाए तब क्या होता है?'

'भन्ते ! तैजस के परमाणु अंधकार में बदल जाते हैं। कमरा अंधकारमय हो जाता है।' (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री सुंदरजी (नाथद्वारा) दीक्षा क्रमांक 259

साध्वीश्री उत्कृष्ट तपस्विनी और वैरागिणी थी। आपके त्याग-विवरण तथा तप प्रधान जीवन की झांकी इस प्रकार है-

उपवास/423, 2/26, 3/35, 4/33, 5/8, 6/1, 7/3/ 8/1, 9/4, 10/2, 12/1, 13/1, 14/1, 15/5, 16/1, 18/1, 25/1, 28/1, 30/8, 33/1, 45/1, 60/1, 120/1, 157/1, 180/3 (छहमासी), 184/1। इसके अतिरिक्त आपने साढ़े पांच महीने एकान्तर, अनेक बार अढाई सौ प्रत्याख्यान तथा सौ बार दस प्रत्याख्यान किये।

आपने 39वर्ष तक शीतकाल में शीत सहन किया। 16 हाथ वस्त्र से अधिक पहनने ओढ़ने के काम में नहीं लिया।

तपोमूर्ति से घोर तप एवं शीतादि परिषह सहन करने के साथ स्वाध्याय, ध्यान और जाप आदि का उपक्रम चलता रहा।

- साभार : शासन समुद्र -

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण
कालूयशोविलास में
तत्त्व निरूपण



5. मिथ्यात्वी की करणी भगवान की आज्ञा में

मिथ्यादृष्टि प्राणी की करणी के बारे में जैन परम्परा में मतैक्य नहीं है। जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुसार मिथ्यात्वी की धर्म-क्रिया भगवान की आज्ञा में नहीं है। आचार्य भिक्षु ने मिथ्यात्वी की सत्क्रिया को वीतराग भगवान की आज्ञा में माना है। श्रीमज्जयाचार्य ने 'भ्रम विध्वंसन' में इसे आगम- सिद्ध किया है। एक बार पचपदरा में कालूगणी के समक्ष कुछ जैन लोग आए। उन्होंने कहा-जयाचार्य द्वारा भ्रमविध्वंसन में उल्लिखित 'मिथ्यात्वी को करणी भगवान की आज्ञा में, सिद्धान्त शास्त्र-सम्मत नहीं है। पूज्य गुरुवर ने भगवती सूत्र की चउभंगी, जिसमें बाल तपस्वी भी मोक्ष का देश आराधक बतलाया गया है, के आधार पर जयाचार्य के उक्त उल्लेख को आगमानुकूल प्रमाणित किया।

6. धर्म की कसौटियां

आचार्य भिक्षु ने धर्म की कुछ कसौटियां दीं। प्रस्तुत कृति में भी तेरापंथ-सम्मत धर्म की कुछ कसौटियां प्रगट हुई हैं—

1. धर्म खरीदा नहीं जा सकता, वह अमूल्य है।
2. धर्म उपदेश में है, बल प्रयोग और आवेश में नहीं।
3. धर्म अहिंसा है, हिंसा नहीं।
4. धर्म व्रत है, अव्रत नहीं।
5. धर्म वीतराग की आज्ञा में है, आज्ञा से बाहर नहीं।
6. धर्म पात्र-दान है, अपात्र-दान नहीं।

मोल धर्म अथवा अनमोलो? बोलो मत सकुचायो।
बल-प्रयोग आवेश धर्म है, वा उपदेश सुहायो:।।
हिंसा-अहिंसा-मध्य प्रश्न हो, व्रताव्रते बतलायो।
किं-वा धर्म आप्त-आज्ञा में, वा विपरीत बतायो।।
पात्र-दान कल्याण-निदान, वा अपात्र कहिवायो?।
पात्रापात्र-विवेचन रेचन, ले भ्रम-मेल मिटायो।।

(का. ३/६/२४-२६)

7. प्रामाण्य की कसौटी पर आगम

भारतीय दर्शन जगत में प्रमाणवाद एक बहुचर्चित विषय रहा है। जैन दर्शन में प्रमाणद्वयी सम्मत है-प्रत्यक्ष और परोक्ष। परोक्ष प्रमाण के पांच प्रकार हैं-स्मृति, प्रत्यभिज्ञा, तक, अनुमान और आगम। जैन धर्माभिमत आगमों के अनेक प्रकार हैं। उनमें एक है अंग। वे संख्या में ग्यारह हैं। उन्हें स्वतः प्रामाण्य की मान्यता प्राप्त है। शेष आगम जो इनसे संवादी हैं वे भी प्रमाण के रूप में स्वीकृत हैं। जो अंगों से विसंवादी हैं, वे अप्रमाण हैं। बीकानेर के कुछ जैन अनुयायियों ने पूज्य कालूगणी से पूछा- आपको कितने आगम मान्य हैं?

गुरुवर- द्वादशांगी मान्य है और द्वादशांगी से संवादी होने के कारण आगम-बत्तीसी (शेष २१ आगम) हमें मान्य हैं।

प्रश्नकर्ता- बत्तीसी के अतिरिक्त पैतालिस और चौरासी आगमों के अन्तर्गत जो शास्त्र हैं, जिसका नंदी सूत्र में नामोल्लेख भी है, वे आपको मान्य क्यों नहीं?

समाधान की भाषा में गुरुवर बोले- बत्तीसी के अतिरिक्त आगमों का जहां तक प्रश्न है, यह स्पष्ट है कि उनमें कुछ आगम तो अभी अप्राप्य हैं और उपलब्ध आगमों के मूल स्वरूप में मिश्रण हुआ है। इस दृष्टि से महानिशीथ के तीसरे अध्ययन का एक उल्लेख मननीय है। महानिशीथ के संकलनकार लिखते हैं- 'जिन स्थलों पर पदानुरूप सूत्रालापक प्राप्त नहीं हुए, वहां श्रुतधरो ने अपने चिंतन के अनुसार उचित पदों का संकलन किया है। अब शासन देवी द्वारा प्राप्त इसकी मूल प्रति खंडित है। तथा उदेई के जन्तुओं द्वारा भी कई पन्ने विकृत कर दिए गये हैं। इसलिए इसमें जहां कहीं भी कुलिखित विसंगत तथ्य हैं, पाठक उसका दोष मुझे न दें।' कालूगणी ने कहा- इस स्थिति में उन आगमों को प्रामाण्य का पड़ा कैसे दिया जा सकता है। कालूयशोविलास के तीसरे उल्लास को नवमीं ढाल में इस प्रसंग की मूल भाषा द्रष्टव्य है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyp@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अप्रैल 2026

सप्ताह के विशेष दिन

03 अप्रैल

भगवान
कुंथुनाथ निर्वाण
कल्याणक

04 अप्रैल

भगवान
शीतलनाथ निर्वाण
कल्याणक

07 अप्रैल

भगवान
कुंथुनाथ दीक्षा
कल्याणक

08 अप्रैल

भगवान
शीतलनाथ च्यवन
कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत संसदीय मंच संगोष्ठी सम्पन्न

नई दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में नई संसद भवन स्थित G-074, Parliament Library Building में आयोजित 'अणुव्रत संसदीय मंच संगोष्ठी' सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। 'विकसित भारत के निर्माण में अणुव्रत - नैतिक राष्ट्र की आधारशिला' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी में देश के नीति-निर्माताओं, संतों एवं चिंतकों ने सहभागिता कर नैतिक मूल्यों पर आधारित राष्ट्र निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ति शासनश्री मुनि विमलकुमार जी ठाणा-4 एवं सुशिष्य डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ठाणा -2 का प्रेरणादायी सान्निध्य प्राप्त हुआ। अपने उद्बोधनों में उन्होंने अणुव्रत के सिद्धांतों को आधुनिक जीवन एवं शासन व्यवस्था में अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नैतिकता ही विकसित भारत की सुदृढ़ आधारशिला बन सकती है। भारत सरकार के केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री एवं संसदीय

कार्य राज्य मंत्री, अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक माननीय अर्जुनराम मेघवाल ने अणुव्रत संसदीय मंच के विजन और मिशन को प्रस्तुत करते हुए 'विकसित भारत और अणुव्रत' संकल्प से सिद्धि तक की रूपरेखा प्रस्तुत की। आपने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जी सान्निध्य में लाडनू में सांसद सम्मेलन व दिल्ली में संसद भवन में संसदीय मंच संगोष्ठी हेतु मनोभाव व्यक्त किये। इस संगोष्ठी में माननीय वी. सोमन्या (रेल एवं जल शक्ति राज्य मंत्री) सहित अजय भट्ट नैनीताल-उत्तराखंड, गोविन्द कारजोल कर्नाटक, दर्शन सिंह चौधरी मध्यप्रदेश, रामचन्द्रा जांगडा हरियाणा, सतीश गौतम उत्तरप्रदेश, डी के अरूना तेलंगाना, रमिलाबेन गुजरात आदि विभिन्न राज्यों के सांसदों एवं गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रबुद्ध वक्ताओं ने अणुव्रत आंदोलन को समाज में नैतिक जागरण का प्रभावी माध्यम बताते हुए इसे जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता व्यक्त की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि मधुर कुमार जी, मुनि अक्षय कुमार जी व मुनि

धन्य कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी द्वारा अणुव्रत गीत से हुआ। विद्वत मुनिश्री गण के प्रवचन, प्रेरणा पाथेय एवं सांसद जिज्ञासा समाधान ने कार्यक्रम को विशेष ऊंचाई प्रदान की। अणुविभा के मुख्य न्यासी श्री तेजकरण सुराणा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विषय की सशक्त प्रस्तुति करते हुए अणुव्रत की बात स्वागत स्वरों के साथ रखी। निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर ने ओजस्वी स्वरों विषय कि अभिव्यक्ति दी। अणुविभा उपाध्यक्ष व योगक्षेम वर्ष संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया द्वारा प्रभावी संचालन किया गया आभार ज्ञापन सुरेन्द्र नाहटा द्वारा किया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड एवं संयोजक अर्जुनराम मेघवाल ने सभी अतिथियों एवं सहभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह संगोष्ठी विकसित भारत के नैतिक स्वरूप को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी। मुनि विमलकुमार जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम संपूर्ण हुआ।

ब्लड डोनेशन कैम्प का सफल आयोजन

पर्वत पाटीया।

तेरापंथ युवक परिषद आयोजित ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया जिसमें 27 यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया। आज के इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के महामंत्री

सौरभ पटावरी की विशेष उपस्थिति रही और साथ में अ.भा.ते.यु.प. सदस्य प्रकाश छाजेड एवं कुलदीप कोठारी भी उपस्थित रहे। तेरापंथ पर्वत पाटीया से अध्यक्ष अमित बुचा उपाध्यक्ष शैलेश चण्डालिया, मंत्री अशोक कोचर, सहमंत्री दीपक बैद, अनिल नाहटा, निवर्तमान अध्यक्ष रवि मालू MBDD,

संयोजक प्रदीप पुगलिया, परामर्शक अनिल चौधरी और कार्यकारिणी तेरापंथ सदस्यों एवं किशोर मंडल सदस्यों की उपस्थिति रही। किरण ब्लड बैंक द्वारा अपनी सेवाएं दी गयी अंत में मंत्री अशोक कोचर द्वारा ब्लड बैंक, ब्लड डोनर और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया गया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का हुआ सफल आयोजन

उत्तर कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में निर्देशन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'आरोग्य' व सम्मान समारोह का सफल आयोजन तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कलकत्ता द्वारा ओम स्काई लार्क के कम्युनिटी हॉल में किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन जी मांडोत, मुख्य अतिथि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के

प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, ATDC के उद्घाटनकर्ता आशिका फाउंडेशन से बाबूलाल जी बाफणा, अभातेयुप. के पूर्व अध्यक्ष रतन दुगड, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा, A.T.D.C. के राष्ट्रीय प्रभारी पीयूष लूनिया, ईस्ट जोन के प्रभारी सिद्धार्थ चोरडिया, शाखा प्रभारी सुमति छाजेड, अभातेयुप के सदस्य राजीव बोथरा, जय चोरडिया, भरत सिरोहिया, हर्ष दुगड, आदित्य संचेती, दीप-चंद पुगलिया आदि गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ

जीवन जीना चाहता है इसलिए सात सुखों की परिकल्पना में स्वस्थता को प्रथम स्थान पर पहला सुख निरोगी काया के रूप में स्थापित किया गया है। आरोग्य अनमोल है। रोग बाजार में आसानी से मिल सकता है, हॉस्पिटल व डॉक्टरों की भी कोई कमी नहीं है। दवाईयाँ भी बड़ी मात्रा में मिल सकती है। आरोग्य ही एक ऐसा है जो लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी मिलना मुश्किल है। स्वस्थता आरोग्य व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण मंत्र है। मुनिश्री ने आगे कहा जीवन की सफलता का मूल मंत्र है अच्छा स्वास्थ्य। जैसे ज्ञान का सार आचार, धर्म का सार शांति है वैसे

ही मूल है जीवन का सार अच्छा स्वास्थ्य है। जो अपने आप में ठहरता है वह स्वस्थ है। स्वस्थ वह होता है जो हिताहार, श्रमशील, सोच-विचार कर कार्य करने वाला, विषयों में अनासक्त दाता है व उपशम की साधना करता है।

युवाओं में गांभीर्य, औदार्य, माधुर्य और स्थैर्य का विकास हो। उत्तर कोलकाता तेरापंथ सक्रिय व उत्साही परिषद है। सभी विकास करें। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विभिन्न परिषदों के अध्यक्ष-मंत्री व उत्तर कोलकाता तेरापंथ द्वारा विजयगीत के संगान

से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप हीरावत ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पवन मांडोत ने उत्तर कलकत्ता तेरापंथ के कार्यों की सराहना करते हुए कहा- मात्र 70 सदस्यों की संख्या वाली परिषद ने ATDC का शुभारंभ कर सेवा, स्वास्थ्य व समाज के विकास का आंदोलन खड़ा किया है। सभी सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं। आभार ज्ञापन मंत्री आदित्य संचेती व संचालन मुनि परमानंदजी व सम्मान समारोह का संचालन मंत्री आदित्य संचेती ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

नागपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल तेरापथ जैन समाज का एक सशक्त महिला संगठन है, अभातेममं के निर्देशानुसार नागपुर तेरापंथ महिला मंडल गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान NGO Meet का आयोजन Women's Day के उपलक्ष में को तेरापंथ भवन में किया गया। अध्यक्ष प्रमिला मालू ने सभी का स्वागत करते हुए इस प्रोग्राम की जानकारी दी।

इस कार्यक्रम में 14 NGO संस्थाओं ने अपनी उपस्थिति दी। प्रेरणा सम्मान श्रद्धा की प्रतिमूर्ति घेवरी बाई डागा को दिया गया। मुख्य अतिथि बीजेपी कॉरपोरेटर संतोष लड्डा का स्वागत तेरापंथ महिला मंडल के पदाधिकारी बहनों ने किया और इनका परिचय हमारी परामर्शक प्रेमलता ने दिया।

संतोष लड्डा ने सशक्त महिला के लिए तीन पायदान का सुझाव दिया:- उच्च शिक्षा ग्रहण करें। आर्थिक स्वावलंबी बनें। वैचारिक स्वावलंबी बनें। NGO मीट में सभी NGO ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम

प्रोजेक्ट डायरेक्टर प्रेमलता सेठीया, मीनू बोथरा, चंदना डागा। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन मीनू बोथरा एवं प्रेमलता सेठीया ने किया। तेममं सहमंत्री विनीता बोथरा ने सभी का आभार किया।

वणी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान एनजीओ मीट व प्रेरणा सम्मान का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल वणी द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम की प्रमुख अतिथि वणी नगराध्यक्ष विद्या खेमराज आत्राम व विशेष अतिथि वणी की फेमस राजनीतिक व एनजीओ किरण देकर, फॉरेस्ट ऑफिसर संगीता कोकणे व जैन महिला मंडल की अध्यक्ष नंदा भंडारी की उपस्थिति रही। अध्यक्ष सरोज भंडारी ने सभी का स्वागत करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। प्रेरणा सम्मान पुरस्कार सेवाभावी माता सौ सुनंदाबाई अशोक छल्लानी को दिया गया। कार्यक्रम का कुशल

व सटीक संचालन मंत्री श्वेता जैन ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष कल्पना नाहर ने किया।

बेलपाड़ा

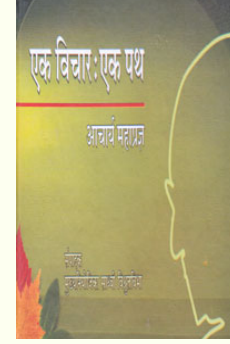
मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय वाइस प्रिंसिपल संजुक्तारानी गौड़ की गरिमामय उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीतिका का संगान किया।

तत्पश्चात तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष लक्ष्मी जैन ने नारी शक्ति का स्वागत करते हुए कहा कि नारी शक्तिमान बनती है तो राष्ट्र मजबूत होता है। संजुक्ता कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए कहा की नारी परिवार, समाज और राष्ट्र की आधार होती है जहां नारी मां के रूप में प्यार देती है, बहन के रूप में स्नेह प्रदान करती है वहीं बेटी के रूप में घर में खुशियां लाती है।

सुमन जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा की भगवान ने तो नारी को लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा प्रेम की प्रतिमूर्ति बना कर सर्वशक्तिमान बनाया था। नूरी जैन द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

बोलती किताब

एक विचार : एक पथ



मनुष्य का अतीत भले ही लौटकर क्रियाशील नहीं होता, लेकिन वह जीवन के लिए प्रेरणा अवश्य देता है। इतिहास हमें यह बताता है कि मनुष्य किन अनुभवों से गुज़रा और कैसे आगे बढ़ा। जब हम अतीत के संदेशों को समझते हैं, तब वही ज्ञान वर्तमान में हमारे मार्गदर्शन का आधार बन जाता है। इसलिए प्रगति के सफर में अतीत का महत्व कम नहीं होता।

जैन परंपरा में प्रथम तीर्थंकर अर्हत् ऋषभदेव का जीवन मानव सभ्यता के शुरुआती अध्याय से जुड़ा माना जाता है। उनके जीवन में आदिम युग के मनुष्य की जीवनशैली, सोच और स्थितियों की झलक मिलती है। ऋषभदेव ने समाज, परिवार और श्रम की नई परम्पराएँ स्थापित कर मानव को एक सभ्य जीवन-पथ दिया। यह योगदान मानव इतिहास में क्रांतिकारी कदम साबित हुआ।

ऋषभायण नामक ग्रंथ में ऋषभदेव के जीवन से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण प्रसंगों का वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ बताता है कि किस प्रकार मनुष्य प्रारंभिक अवस्था से आगे बढ़कर सामाजिक नियमों और जीवन-व्यवहार की ओर अग्रसर हुआ। ऋषभायण केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि यह संस्कार, सभ्यता और श्रम-संस्कृति का आदर्श ग्रंथ भी है।

सन् 1997 में गंगाशहर प्रवास के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा ऋषभायण पर कई प्रवचन दिए गए थे। वे प्रवचन आज पुस्तक के रूप में उपलब्ध हैं। इन्हें पढ़कर पाठक न केवल इतिहास और अध्यात्म से परिचित होता है, बल्कि अपने जीवन के लिए प्रेरणा भी प्राप्त करता है। यह पुस्तक अतीत और वर्तमान के बीच सार्थक संवाद स्थापित करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

ज्ञानशाला नव सत्र का शुभारंभ

गांधीनगर।

ज्ञानशाला पर्यवेक्षक बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में पावन नमस्कार महामंत्र के साथ आज ज्ञानशाला के नए सत्र का अत्यंत गरिमामय और आध्यात्मिक वातावरण में शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रशिक्षिकाओं द्वारा भक्तिमय मंगलाचरण का सामूहिक संगान किया गया। ज्ञानार्थियों ने पूरी

श्रद्धा के साथ 'तुलसी अष्टकम' का सुमधुर संगान किया। मुनि श्री ने स्वयं पांच बार नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करवाया।

उन्होंने बच्चों को संस्कारित करते हुए यह सीख दी कि दिन भर में किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले कम से कम एक बार नमस्कार महामंत्र का स्मरण अवश्य करना।

आज के नव सत्र शुभारंभ के अवसर पर विभिन्न संघीय सभा

संस्थाओं के पदाधिकारियों और प्रतिनिधियों, अभिभावकों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभी ने ज्ञानशाला के नए सत्र के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए श्रावक समाज और अभिभावकों से ज्यादा से ज्यादा बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ने की प्रेरणा दी। पिछले सत्र में भाग 1 से 5 तक उतीर्ण सभी परीक्षार्थियों को मुनिश्री के सान्निध्य में सर्टिफिकेट भी वितरित किए।

पृष्ठ 1 का शेष

शिष्य गुरु के प्रति...

पहला - शिष्य आए तो उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखना, दूसरा - शिष्य के अच्छे कार्यों को भी महत्त्व नहीं देना, तीसरा - चेहरे पर कोप लाकर उसका तिरस्कार कर देना, चौथा - शिष्य की कमियों को कोप के साथ उजागर करना, पांचवां - बोलचाल बंद कर देना और छठा लक्षण है - कोई अन्य साधु उस शिष्य या साधु की प्रशंसा करे तो गुरु के चेहरे पर प्रसन्नता

के भाव नहीं आते। इस प्रकार इन छः लक्षणों से गुरु की अप्रसन्नता का अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु कुछ आचार्य ऐसे भी होते हैं जो शिष्य की गलती होने पर भी अप्रसन्नता प्रकट नहीं करते और सामान्य भाव से उसका मार्गदर्शन करते हैं।

आगम में कहा गया है कि यदि शिष्य को लगे कि आचार्य मुझसे कुपित हैं, ऐसी स्थिति में शिष्य को गुरु को प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए।

इसके लिए शिष्य प्रीतिकारक वचनों का प्रयोग करे, गुरु में यह विश्वास पैदा करे कि ऐसी गलती की पुनरावृत्ति अब भविष्य में नहीं करूंगा। शिष्य गुरु के प्रति विनय भाव रखे।

गुरु को वंदन करे, हाथ जोड़कर गुरु के कोप को शांत करने का प्रयास करे। इस प्रकार शिष्य गुरु को प्रसन्न करने का प्रयास करे क्योंकि गुरु की अप्रसन्नता शिष्य के लिए अच्छी नहीं होती है।

वृहद मंगल पाठ का आयोजन

कांचीपुरम।

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमययशा जी ठाणा -3 के सान्निध्य में नव वर्ष के सुअवसर पर वृहद मंगल पाठ एवं अनुष्ठान का आयोजन कांचीपुरम में किया गया।

इस आध्यात्मिक समारोह में साध्वी सोमययशा जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा नया वर्ष नए दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत हुआ नया वर्ष नई उमंग लेकर आया है नया वर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक आनंदमय -निरामय और मंगलमय बने नए वर्ष पर यही संकल्प करें सबके भीतर पवित्रता निर्मलता -जागरूकता

सकारात्मकता का विकास होता रहे यह सत्य है जिंदगी आसान नहीं है पर उसे आसान बनाया जा सकता है ,कुछ बात को नजर अंदाज करे अपने अंदाज से जिए साध्वी ऋषि प्रभा जी ने कहा नव वर्ष का मात्र आयोजन ना हो यह हमारे प्रयोजन को सिद्ध करने बाला बने इसके लिए पांच सूत्रों पर हमें फोकस करना चाहिए, समय प्रबंधन- संकल्पबल -श्रम निष्ठा -सकारात्मक सोच -सुसंस्कार अपनाने पर बल देते हुए फरमाया हमारा जीवन एक्सेप्ट के साथ क्रिएशन बने तभी हम अपनी साधना को सुदृढ़ बना सकते हैं। कांचीपुरम के सभी भाई बहनों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया कार्यक्रम और सहयोगी बने।

दैनिक जीवन की क्रियाओं में हो जागरूकता : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

18 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन विश्व भारती की पावन धरा पर 'सुधर्मा सभा' में चतुर्विध धर्म संघ को मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में 'समिय-समित' शब्द की परिभाषा देते हुए कहा है कि जो प्राणों का अतिपात अर्थात् प्राणातिपात नहीं करता वह समित होता है।

वर्तमान में भगवान महावीर के शासन में पंचमहाव्रतात्मक धर्म है। साधु के पांच महाव्रतों में पहला महाव्रत है-सर्व प्राणातिपात विरमण। अर्थात् अहिंसा महाव्रत। कुछ संदर्भों में अहिंसा महाव्रत धारी साधु के भी हिंसा का प्रसंग देखा जा सकता है। अहिंसा और हिंसा को निश्चय नय से देखें तो आत्मा ही अहिंसा है और आत्मा ही हिंसा है। जो अप्रमत्त है, सजग है, जागरूक है वह साधु अहिंसक है। जो साधु प्रमादी है, वह हिंसक होता है। जीव का मरना और नहीं मरना एक व्यवहार



की बात है। यदि कोई अप्रमादी साधु चल रहा है और पैर के नीचे आकर कोई जीव मर जाए तो व्यवहार की भूमिका में यह हिंसा है और साधु व्यवहार में हिंसक है परन्तु निश्चय की भूमिका में

साधु अप्रमत्त है और जीव मर भी गया तो भी वह साधु अहिंसक है। वह साधु पाप का भागी नहीं बनेगा। अतः हिंसा और अहिंसा को निश्चय और व्यवहार दोनों के ही आलोक में देखा जा सकता है।

व्यवहार की अहिंसा और हिंसा का भी अपना महत्व है। साधु की सामान्यतः पाद विहार चर्या है। अतः इसमें यदि ईयां समिति से चलते हैं तो कितनी अहिंसा की आराधना हो जाती है। विहार, गोचरी,

आदि के समय चलते समय यथा संभव मौन रहे और जागरूकता पूर्वक चलें कि कोई कीड़ा, मकौड़ा, आदि पैर के नीचे न आ जाए। जैन शासन में अहिंसा का सूक्ष्मता से ध्यान दिया गया है। चलने में साधना का उपयोग भी करना पड़े तो उसे भी तेज गति से नहीं चलना चाहिए इसमें भी जीव हिंसा के प्रति हमारी जागरूकता रहनी चाहिए। साधु के नंगे पांव चलना भी एक तपस्या और साधना है, इससे गति भी संतुलित रहती है और जीवों की अहिंसा की भी अधिक अच्छी तरह से पालना हो पाती है।

आज चैत्र कृष्ण चतुर्दशी और 'अनुशासन पर्व' के पावन प्रसंग पर हाजरी वाचन का उपक्रम हुआ। आचार्य प्रवर ने कहा कि साधु पांच महाव्रत, पांच समितियों, और तीन गुप्तियों की अखंड आराधना करे। दैनिक जीवन की छोटी-छोटी क्रियाओं में भी पूर्ण जागरूकता रहे। अहिंसा विषयक अनेक प्रेरणाएं प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि हमारी चर्या में जीवों के प्रति दया और आत्मा की रक्षा का भाव रहे, यही अहिंसा महाव्रत का सार है।

विनय और अनुशासन है हमारे संघ की गरिमा : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

17 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'सुधर्मा सभा' में उत्तरज्ज्ञयणाणि आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अनुशासन एक उपाय है।

अनुशासन स्वयं का स्वयं पर तो होना ही चाहिए, दूसरों पर अनुशासन करने के लिए मुख्य अर्हता यह है कि व्यक्ति स्वयं पर शासन करे। जो स्वयं पर शासन करने में बहुत ही कमजोर है, उस व्यक्ति को दूसरों पर अनुशासन करने का नैतिक अधिकार नहीं है।

जो व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकता, ना वाणी का संयम रखता है और न ही आचार में निष्ठा, उसे दूसरों पर अनुशासन करने का नैतिक अधिकार नहीं है। इसी संदर्भ में 'निज पर शासन-फिर अनुशासन' का उद्घोष प्रासंगिक है।

जहां संगठन और समाज है वहां

अनुशासन अपेक्षित भी होता है। संगठन या समाज सुचारू रूप से चले इस हेतु सारणा-वारणा, गलतियों पर टोकना और अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करना बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक होता है।

गलतियों पर भी कोई कहने और समझाने वाला नहीं हो तो वह संगठन कमजोर पड़ सकता है और कभी धराशायी भी हो सकता है। इसलिए अंगुली निर्देश करना और अंगुली निर्देश करने की योग्यता का होना, अपेक्षित होता है। संगठन के मुखिया, अनुशास्ता को अपने संगठन में होने वाली गतिविधियों पर दृष्टि रखना भी आवश्यक होता है।

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि गुरु महान होते ही हैं, पर कोई शिष्य भी इतने महान होते हैं कि यदि गुरु से बिना गलती के भी उलाहना मिल जाए तो वे उसे विनम्रता से सहन कर लेते हैं और आवेश में नहीं आते।

उस समय वह शिष्य महान बन जाते हैं। तेरापंथ धर्म संघ की यह विशेषता रही है कि यहां विद्वान, दीक्षा



पर्याय और उम्र में बड़े साधु-साध्वियां भी अपने गुरु के प्रति पूर्ण विनय भाव रखते हैं।

आचार्यश्री ने गुरुदेव तुलसी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बतलाया कि जब वे 22 वर्ष की आयु में आचार्य

बने उस समय संघ में ज्ञान, उम्र और दीक्षा पर्याय में अनेक बड़े संत थे पर सभी ने उन्हें सिर आंखों पर बिठाया और पूर्ण नेतृत्व स्वीकार किया। हमारे धर्म संघ में आज भी अनेक वैदुष्य और अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ साधु-साध्वियां

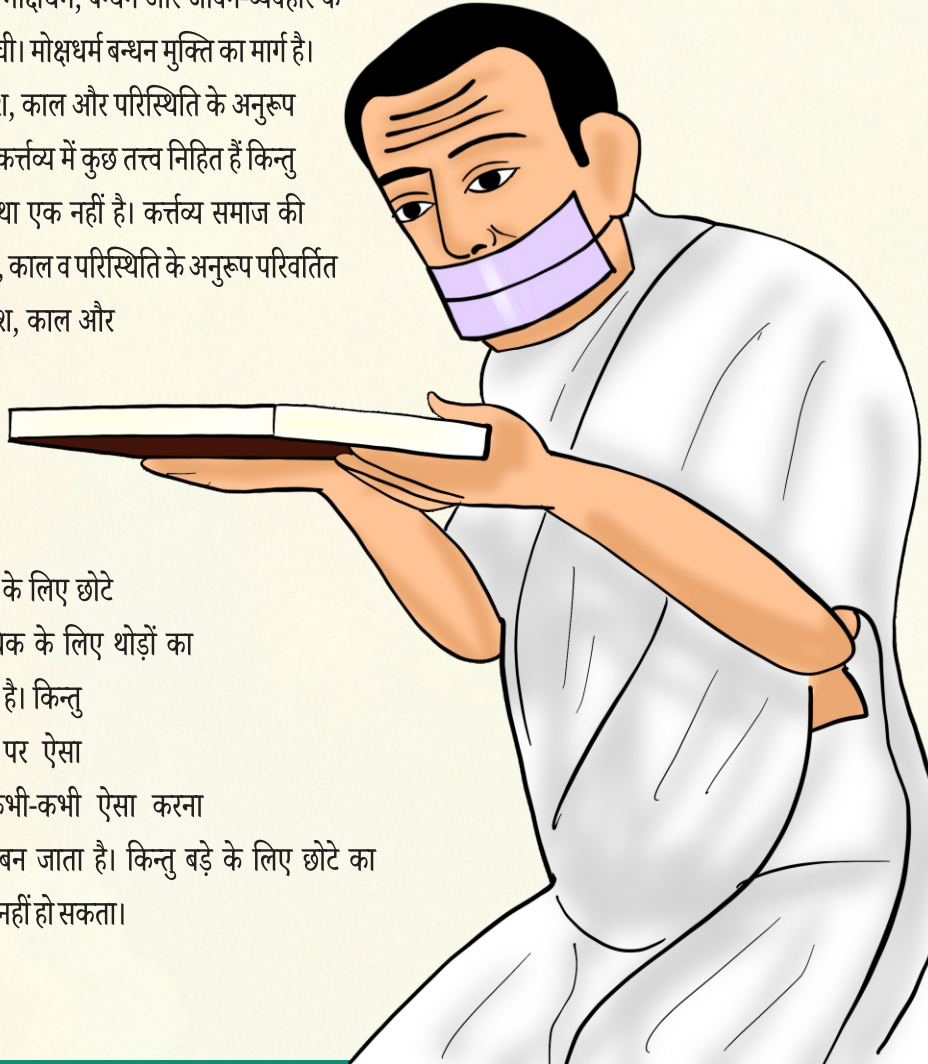
हैं, वे सभी अनुशासन की डोर से बंधे रहते हैं। यही विनय, आज्ञाकारिता और अनुशासन हमारे संघ की बहुत बड़ी गरिमा है, जो संगठन को सुरक्षा प्रदान करती है और संघ को निरंतर विकास की ओर ले जाती है।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

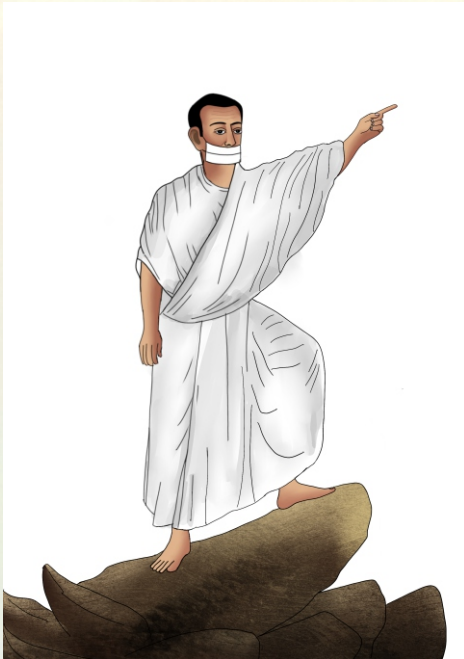
धर्म और कर्तव्य

आचार्य भिक्षु ने मोक्षधर्म, बन्धन और जीवन-व्यवहार के बीच एक भेदरेखा खींची। मोक्षधर्म बन्धन मुक्ति का मार्ग है। यह शाश्वत है। वह देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप नहीं बदलता। धर्म के कर्तव्य में कुछ तत्त्व निहित हैं किन्तु धर्म और कर्तव्य सर्वथा एक नहीं है। कर्तव्य समाज की उपयोगिता है। वह देश, काल व परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। धर्म देश, काल और परिस्थिति के कारण नहीं बदलता।

अध्यात्म का मूल है—समता। समता के क्षेत्र में बड़े के लिए छोटे का बलिदान या अधिक के लिए थोड़ों का बलिदान अनुमत नहीं है। किन्तु व्यवहार में पग-पग पर ऐसा करना पड़ता है। कभी-कभी ऐसा करना लौकिक कर्तव्य भी बन जाता है। किन्तु बड़े के लिए छोटे का बलिदान कर देना धर्म नहीं हो सकता।



मैं तेरापंथी हूँ



नियति में छिपी एक ऐसी दूरदर्शी घटना जिसका आभास शायद किसी को भी नहीं था। घोर विरोधी वातावरण, कण्टकाकीर्ण पथ, नंगे पैर चलने का साहस वो भी अकेले। ये वे नींव के पत्थर हैं जो इस शासन को मजबूती व चिर-स्थायित्व प्रदान करते हैं। जिसका नामकरण भी सार्थकता लिये है, जहां 'मैं' का कोई स्थान नहीं है। वह गौरवशाली नाम है 'तेरापंथ'।

जिस प्रकार नाम से ही हम जान सकते हैं कि इसमें 'तेरा' शब्द का प्रयोग हुआ है, अर्थात् इसमें 'मेरा' का कोई स्थान नहीं है। एक और व्याख्या है तेरापंथ की। जो पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति के प्रति श्रद्धावान है, उनकी अखण्ड आराधना करते हैं। स्वामीजी ने 'तेरापंथ' में बड़ी उदारता वाली व्याख्या दी है। हम तो इस पंथ के पथिक है। मात्र राही, पथ पर चलने वाले। मालिक आप है। आप अर्थात् 'अरिहंत प्रभु!' और अरिहंत के कुशल प्रतिनिधि वर्तमान आचार्य जो इस महापथ में अपना सर्वस्व समर्पित किए हुए हैं। हमें गौरव है कि हम इस पथ के पथिक है। गर्व से कहें हम तेरापंथी हैं।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

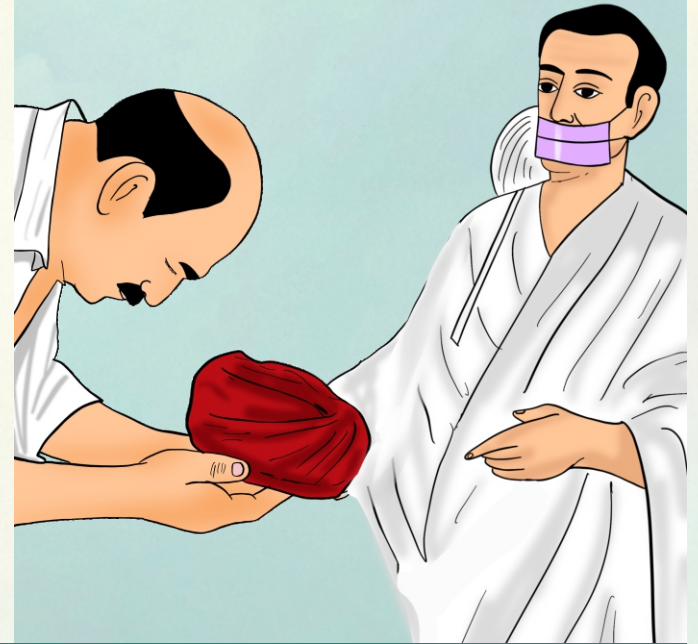
खामी बताए तो तेले का प्रायश्चित्त

भारमलजी स्वामी बाल-मुनि थे, तब स्वामीजी ने कहा- 'कोई गृहस्थ खामी बतलाए, ऐसा काम तुझे नहीं करना चाहिए।' गृहस्थ खामी बतलाए वैसा काम यदि तू करेगा, तो एक तेले का प्रायश्चित्त करना होगा।

तब भारमलजी स्वामी बोले- 'यदि कोई झूठ-मूठ खामी बतला दे, तो ?'

तब स्वामीजी ने कहा- 'कोई झूठ-मूठ खामी बतलाए, तो समझ लेना पहले किए हुए पाप उदय में आए हैं।'

भारमलजी स्वामी बड़े विनीत थे। स्वामीजी का वचन शिरोधार्य कर लिया। ऐसे विनीत और उत्तम पुरुष होते हैं, वे किसी को खामी बताने का अवसर ही कैसे देंगे ?



क्या आप जानते हैं?



सब्जीखार को सचित माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

नवकारसी करने का संकल्प करे

समय का अधिकाधिक सदुपयोग करने का संकल्प रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

नव संवत्सर : (वि.सं. 2083) पर पूज्यप्रवर ने दिया मंत्र : TIME IS MONEY

लाडनूँ।

19 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लाडनूँ की पावन धरा पर 'सुधर्मा सभा' में नव संवत्सर (वि.सं. 2083) के संदर्भ में आज के विषय - 'समय का हो अंकन' पर आगम आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि वि.सं. 2082 की समाप्ति और वि.सं. 2083 का प्रारंभ हुआ है। वर्ष आता है और बीतते-बीतते संपन्नता को प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति का जन्म दिवस आता है तो व्यक्ति के मन में उत्साह और परिपार्श्व के लोगों में भी उमंग का भाव हो सकता है। परन्तु उल्लास के साथ जिसका जन्म दिवस है उसके दिमाग में यह बात भी रहे कि मेरे जीवन का एक वर्ष और कम हो गया है।

एक-एक दिन भी बीतता है तो खजाने में तो थोड़ी कमी आ ही रही है। अतः व्यक्ति जागरूक रहे और समय का अंकन हो।

जिस प्रकार बरसात का पानी बरसता है उसी प्रकार समय मानो बरस रहा है, और वो भी मुफ्त में। कोई व्यक्ति बरसात के पानी को संग्रहीत कर लेता है और समय पर उसका सदुपयोग कर लेता है तो कोई पानी को योंही नाली में व्यर्थ ही बहा देता है।

'टाइम इज मनी' अर्थात् समय ही धन है। जैसे एक कंजूस व्यक्ति पैसे खर्च करने से पहले यह सोचता है कि पैसा कहां लगाऊँ, ठीक वैसे ही हमें अपना समय व्यतीत करने से पहले गहराई से सोचना चाहिए। वि.सं. 2083 और हमारे लिए यह योगक्षेम वर्ष का अवसर है तो इसका उपयोग प्रेक्षाध्यान, तत्वज्ञान आदि अनेक उपक्रमों के माध्यम से करना चाहिए।



समय को व्यर्थ मत गंवाओ। हमें जो 24 घंटे का एक दिन-रात में समय मिलता है उसका सुन्दर प्रबंधन होना चाहिए। व्यक्ति का अलग-अलग दायित्व और परिस्थितियां हो सकती हैं परन्तु सामान्यतः अपनी समय सारणी निर्धारित कर लेनी चाहिए। व्यक्ति के उठने और

सोने का समय मोटा-मोटी अवश्य निर्धारित हो जाना चाहिए।

समय के संदर्भ में तीन शब्द हैं - सदुपयोग, दुरुपयोग, और अनुपयोग। यदि हम समय का अच्छे कार्यों जैसे सेवा, स्वाध्याय, धर्मोपदेश, आदि में नियोजन कर रहे हैं तो वह समय का सदुपयोग है।

किसी की फालतू निंदा करने या किसी प्राणी को तकलीफ देने में समय लगाना दुरुपयोग है और बिना कुछ किए केवल आलस्य में बैठे रहना अनुपयोग है। प्रकृति निष्पक्ष होकर सबको एक समान 24 घंटे देती है, यह हम पर निर्भर है कि हम उसका कैसा उपयोग करते हैं? गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का स्मरण करते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि गुरुदेव तुलसी कभी रात को देर से पोढ़ाते तब भी उनका प्रातः उठने का प्रायः नियत समय था। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जीवन शैली और समय प्रबंधन कितना अद्भुत था कि 90 वर्ष के जीवन काल में, अपने महाप्रयाण के अंतिम दिन भी उन्होंने प्रवचन, आसन, और आगम का कार्य किया। सभी यह संकल्प लें कि हम अपने समय का अधिकाधिक सदुपयोग करेंगे और अपनी आत्मा के कल्याण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ेंगे।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

